हिन्दी

MODEL PAPER 6

कक्षा-X

समय : 3 घंटे 15 मिनट

पूर्णांक : 80

खंड 'अ'

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (प्रश्न सं. 1 से 5)

भारतवर्ष पर प्रकृति की विशेष कृपा रही है। यहाँ सभी ऋतुएँ अपने समय पर आती हैं और पर्याप्त काल तक ठहरती हैं। ऋतुएँ अपने अनुकूल फल-फूलों का सृजन करती हैं। धूप और वर्षा के समान अधिकार के कारण यह भूमि शस्यश्यामला हो जाती है। यहाँ का नगाधिराज हिमालय कवियों को सदा से प्रेरणा देता आ रहा है और यहाँ की नदियाँ मोक्षदायिनी समझी जाती रही हैं। यहाँ कृत्रिम धूप और रोशनी की आवश्यकता नहीं पड़ती। भारतीय मनीषी जंगल में रहना पसन्द करते थे।

प्रकृति-प्रेम के ही कारण यहाँ के लोग पत्तों में खाना पसन्द करते हैं। वृक्षों में पानी देना एक धार्मिक कार्य समझते हैं। सूर्य और चन्द्र दर्शन नित्य और नैमित्तिक कार्यों में शुभ माना जाता है। पारिवारिकता पर हमारी संस्कृति में विशेष बल दिया गया है। भारतीय संस्कृति में शोक की अपेक्षा आनन्द को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसलिए हमारे यहाँ शोकान्त नाटकों का निषेध है। अतिथि को भी देवता माना गया है - 'अतिथि देवो भव'।

(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है- [1]

(अ) भारत (ब) धरती माँ

(स) भारतीय संस्कृति (द) प्रकृति-प्रेम

(2) 'अतिथि देवो भव' मूलतः किस देश की संस्कृति मानी जाती है? [1]

(अ) श्रीलंका (ब) मॉरीशस

(स) भूटान (द) भारत

(3) भारतीय संस्कृति में नैमित्तिक कार्यों में शुभ माना जाता है- [1]

(अ) शनि-राहु (ब) सूर्य-चन्द्र

(स) मंगल-बृहस्पति (द) शुक्र-बुध

(4) भारत में मोक्षदायिनी स्वरूप माना गया है- [1]

(अ) पर्वतों का (ब) नदियों का

(स) मैदानों का (द) पेड़-पौधों का

(5) सदैव कवियों का प्रेरणास्रोत माना जाता है- [1]

(अ) गंगा नदी (ब) हिमालय पर्वत

(स) सूर्य-चन्द्र (द) तारा-नक्षत्र

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (प्रश्न सं. 6 से 10)

कोई खंडित, कोई कुंठित,
कृश बाहु, पसलियाँ रेखांकित,
टहनी-सी टाँगे, बढ़ा पेट,
टेढ़े-मेढ़े, विकलांग घृणित!
विज्ञान चिकित्सा से वंचित,
ये नहीं धात्रियों से रक्षित,
ज्यों स्वास्थ्य सेज हो, ये सुख से
लोटते धूल में चिर परिचित!
पशुओं-सी भीत मूक चितवन,
प्राकृतिक स्फूर्ति से प्रेरित मन,
तृण तरुओं से उग-बढ़, झर - गिर,
ये ढोते जीवन क्रम के क्षण!
कुल मान न करना इन्हें वहन,
चेतना ज्ञान से नहीं गहन,
जग जीवन धारा में बहते ये मूक,
पंगु बालू के कण!

(6) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक है- [1]

(अ) गाँव के बच्चों में कुपोषण की समस्या

(ब) गाँव के बच्चों में चेतना ज्ञान का अभाव

(स) गाँव में चिकित्सा सुविधाओं का अभाव

(द) गाँव के बच्चों की दयनीय दशा

(7) दूसरे पद में कवि कह रहा है कि- [1]

(अ) गाँव में विज्ञान की शिक्षा नहीं दी जा रही है।

(ब) गाँव में शिशु जन्म हेतु पर्याप्त दवाइयाँ नहीं हैं।

(स) गाँव में बच्चे स्वास्थ्य के प्रति सजग रहकर शारीरिक व्यायाम कर रहे हैं।

(द) गाँव में बच्चे अपने मित्रों के साथ धूल में कुश्ती जैसे खेल खेल रहे हैं।

(8) गाँव के बच्चों की स्थिति कैसी है? [1]

(अ) कुपोषित

(ब) क्षीणकाय, किंतु कुल के मान का ध्यान करने वाले

(स) प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए स्फूर्ति से भरे हुए

(द) पशुओं की तरह बलिष्ठ परंतु असहाय व मूक खिन्न तथा अशिक्षित

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(9) प्रस्तुत पद्यांश में कवि का रवैया कैसा प्रतीत होता है? [1]

(अ) वे बच्चों की दशा के विषय में व्यंग्य कर मनोरंजन करना चाह रहे हैं।

(ब) वे बच्चों की दशा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

(स) वे बच्चों की शारीरिक व मानसिक दशा से संतुष्ट प्रतीत होते हैं।

(द) वे तटस्थ रहकर बच्चों की शारीरिक व मानसिक दशा का वर्णन कर रहे हैं।

(10) 'तृण-तरुओं से उग – बढ़' इस पंक्ति का क्या अर्थ है? [1]

(अ) घास-फूस की तरह हल्के हैं इसलिए तिनकों की तरह उड़ रहे हैं।

(ब) पौधों तथा घास की तरह बिना कुछ खाए-पिए बढ़ रहे हैं।

(स)प्राकृतिक वातावरण में घास व पौधों की तरह फल-फूल रहे हैं।

(द) घास तथा पौधों की तरह पैदा हो रहे हैं तथा मर रहे हैं।

(11) भोलानाथ और उसके साथी अपने घरौंदे के किवाड़ किस चीज से बनाते थे? [1]

(अ) पेड़ के पत्तों से (ब) दियासलाई की डिबिया से

(स) उत्तर पुस्तिका के गत्ते से (द) टीन के टुकड़े से

(12) मन वृदांवन होने का अर्थ क्या है? [1]

(अ) वृदांवन की सैर करना। (ब) वृदांवन में मन बस जाना

(स) अत्यधिक प्रसन्न होना (द) ब्रजवासी होना

2. निम्नलिखित रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. जिस संज्ञा से किसी एक जाति, एक वर्ग या समूह की सभी वस्तुओं का बोध होता है, उसे ..... कहते हैं। [1]
2. जिन सर्वनाम शब्दों के द्वारा किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत किया जाता है, उन्हें .....कहते हैं। [1]
3. जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की संख्या, क्रम या गणना का बोध कराते हैं, वे ..... कहे जाते हैं। [1]
4. जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म हो, उसे ..... कहते हैं, [1]
5. जिस अव्यय शब्द से क्रिया के होने का काल या समय ज्ञात होता है, उसे .....कहते हैं। [1]
6. असुरक्षित शब्द में .....उपसर्ग है। [1]

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 शब्दों में लिखिए।

1. व्यंजन संधि की परिभाषा लिखिए। [1]
2. समास की परिभाषा लिखिए। [1]
3. 'आसमान सिर पर उठाना' मुहावरे का अर्थ लिखिए। [1]
4. 'चोर-चोर मौसेरे भाई' लोकोक्ति का वाक्य प्रयोग लिखिए। [1]
5. बालगोबिन किसके पद गाया करते थे? [1]
6. यशपाल का जन्म कब व कहाँ पर हुआ? [1]
7. मन्नू भंडारी को लेखन की प्रेरणा किससे मिली? [1]
8. गोपियों ने 'अबला भौरी' स्वयं को किनके समान और क्यों बताया है? [1]
9. 'वसन्त' को किसका पुत्र बताया गया है? [1]
10. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए। [1]
11. किस चीज को लेकर दिल्ली में तहलका मचा था? [1]
12. गैंगटॉक (गंतोक) का अर्थ क्या है? [1]

खंड 'ब'

प्रश्न संख्या 4 से 16 तक के लिए प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम उत्तर सीमा 45 शब्द हैं।

4. बच्चे रोना-धोना, पीड़ा, आपसी झगड़े ज्यादा देर तक अपने साथ नहीं रख सकते हैं। 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर बच्चों की स्वाभाविक विशेषताएँ लिखिए। [2]
5. खोजवाँ वालों ने अपनी ओर से कजली दंगल में किसे खड़ा किया था और क्यों? [2]
6. हिरोशिमा के बम विस्फोट में हुई क्षति को देखकर लेखक को कौन-सी घटना याद आई? [2]
7. इक प्रत्यय के दो उदाहरण लिखिए। [2]
8. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है? [2]
9. लक्ष्मण और श्रीराम के वचनों में मुख्य अंतर क्या था? [2]
10. 'संगतकार' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। [2]
11. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है? [2]
12. मन्नू भण्डारी अपने ही घर में हीनभावना का शिकार क्यों हो गई?[2]
13. 'भगत अपनी सब चीज़ साहब की मानते थे', उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। [2]
14. फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है? [2]
15. 'सूरदास' का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए। [2]
16. 'महावीरप्रसाद द्विवेदी' का जीवन परिचय एवं कृतित्व संक्षेप में लिखिए। [2]

खंड 'स'

17. निम्नलिखित पठित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।[1+2]

सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूंदकर सबका विश्वास करते पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

अथवा

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता।

18. निम्नलिखित पठित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।[1+2]

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

अथवा

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू:
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा:
एक की नहीं,
दो की नहीं,
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म:

19. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव को अपने शब्दों में लिखिए। [3]

अथवा

'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए। [3]

20. 'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं' -कुतर्कवादियों की इस दलील का खंडन द्विवेदी जी ने कैसे किया है, अपने शब्दों में लिखिए। [3]

अथवा

'बिस्मिल्लाह खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।' पाठ में आए प्रसंगों के आधार पर लिखिए। [3]

खंड 'द'

21. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300-350 शब्दों में एक सारगर्भित निबंध लिखिए। [4]

(अ) मेरी अविस्मरणीय यात्रा

(1) गंतव्य स्थान तक पहुँचना
(2) वहाँ का वातावरण
(3) दर्शनीय स्थल
(4) अन्य मनोरंजन

अथवा

(ब) अनुशासन

(1) प्रस्तावना
(2) अनुशासन का अर्थ
(3) अनुशासित व्यक्ति के गुण
(4) अनुशासन का महत्व

अथवा

(स) शिक्षा

(1) शिक्षा का महत्व
(2) शिक्षा की मुख्य भूमिका
(3) व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षा का महत्व
(4) उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा का महत्व

अथवा

(द) दहेज प्रथा

(1) परिचय
(2) वधुओं पर अत्याचार
(3) दहेज प्रथा का समाधान
(4) महिला सशक्तिकरण

22. बाज़ार से घर आते समय आपके पिता जी का ए.टी.एम. कार्ड खो गया है। इसकी सूचना देते हुए संबंधित बैंक के प्रबंधक को प्रार्थना-पत्र लिखिए, जिसमें नया ए.टी.एम. कार्ड प्रदान करने का अनुरोध किया गया हो। [4]

अथवा

अपने पिता जी को पत्र लिखकर बताइए कि आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव किस तरह मनाया गया। [4]

23. आपके शहर में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन होने जा रहा है, इसके लिए विज्ञापन तैयार कीजिए। [4]

अथवा

यातायात अथवा परिवहन अधिकारी की ओर से सड़क पर वाहन सावधानी से चलाने का एक सार्वजनिक विज्ञापन लिखिए। [4]

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

उत्तरमाला मॉडल पेपर – 06

खण्ड - अ

1.

(1) (स) भारतीय संस्कृति
(2) (द) भारत
(3) (ब) सूर्य-चन्द्र
(4) (ब) नदियों का
(5) (ब) हिमालय पर्वत
(6) (द) गाँव के बच्चों की दयनीय दशा
(7) (ब) गाँव में शिशु जन्म हेतु पर्याप्त दवाइयाँ नहीं हैं।
(8) (अ) कुपोषित
(9) (ब) वे बच्चों की दशा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।
(10) (द) घास तथा पौधों की तरह पैदा हो रहे हैं तथा मर रहे हैं।
(11) (ब) दियासलाई की डिबिया से
(12) (स) अत्यधिक प्रसन्न होना

2.

(1) जातिवाचक संज्ञा	(2) निश्चयात्मक सर्वनाम
(3) संख्यावाचक विशेषण	(4) द्विकर्मक (सकर्मक) क्रिया
(5) कालवाचक क्रियाविशेषण	(6) अ + सु

3.

1. व्यंजन ध्वनि से परे स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में जो विकार (परिवर्तन)आता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।
2. दो अथवा दो से अधिक शब्दों के मिलने पर जो एक नया स्वतंत्र पद बनता है, उसे समस्तपद तथा इस प्रक्रिया को समास कहते हैं।
3. आसमान सिर पर उठाना:- बहुत शोर करना, उपद्रव मचाना।
4. वाक्य- आनंद चोर है, हरी शराब पीता है और ध्रुव जुआ खेलता है। इन तीनों की आपस में गहरी दोस्ती है, क्योंकि चोर-चोर मौसेरे भाई होते हैं।
5. बालगोबिन कबीर के पद गाया करते थे।
6. यशपाल का जन्म् सन् 1903 में पंजाब के फीरोज़पुर छावनी में हुआ।
7. लेखिका को लेखन की प्रेरणा अपने पिता से व अपनी हिंदी प्राध्यापिका से मिली।
8. गोपियों ने चीटियों के समान स्वयं को अबला, भोली बताया है, जो प्रेमवश स्वयं ही गुड़ से लिपट कर अपने प्राण उत्सर्ग कर देती हैं।
9. 'वसन्त' को सौन्दर्य का देवता 'कामदेव' का पुत्र बताया गया है।
10. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की दो रचनाओं के नाम- अनामिका, नए पत्ते।
11. जार्ज पंचम की नाक को लेकर दिल्ली में तहलका मचा था।
12. गैंगटॉक (गंतोक) का अर्थ- पहाड़।

खण्ड - ब

4. बच्चे मन के सच्चे होते हैं। वे आपसी झगड़े, रोना-धोना, कष्ट की अनुभूति आदि जितनी जल्दी करते हैं उतनी ही जल्दी भूल जाते हैं। वे आपस में फिर इस तरह घुल-मिल जाते हैं, जैसे कुछ हुआ ही न हो। 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की सरलता तथा निश्छलता का पता चलता हैं। वे लड़ाई-झगड़े की कटुता को अधिक देर तक अपने मन में नहीं रख सकते हैं। खेल-खेल में रो देना या हँस देना उनके लिए आम बात है। अपने मनोरंजन के लिए वे किसी को चिढ़ाने से भी नहीं चूकते हैं। सुख-दुख से बेपरवाह हो वे अपनी ही दुनिया में मगन रहते हैं।

5. खोजवाँ वालों ने कजली दंगल में अपनी ओर से दुलारी को खड़ा किया। इसका कारण यह था कि दुक्कड़ पर गानेवालियों में दुलारी बहुत प्रसिद्ध थी। उसे पद्य में सवाल जवाब करने की अद्भुत क्षमता प्राप्त थी। कजली गानेवाले बड़े-बड़े शायर भी उससे मुकाबला करने से बचते थे। दुलारी जिस ओर से गायन के लिए खड़ी होती थी, उसकी विजय निश्चित मानी जाती थी।

6. हिरोशिमा में अणुबम विस्फोट से निकली रेडियोधर्मी तरंगों ने असमय असंख्य लोगों को कालकवलित कर दिया। लेखक ने उस विस्फोट का दुख भोगते हुए लोगों को देखा। यह देखकर भारत की पूर्वी सीमा की घटना याद आ गई कि कैसे सैनिक ब्रह्मपुत्र में बम फेंककर हजारों मछलियाँ मार देते थे जबकि उनका काम थोड़ी-सी मछलियों से चल सकता था। इससे जीवों का व्यर्थ ही विनाश हुआ था।

7. इक प्रत्यय के दो उदाहरण- धार्मिक, लौकिक।

8. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में वक्रोक्ति है। वे दिखने में प्रशंसा कर रही है किंतु वास्तव में कहना चाह रही हैं कि तुम बड़े अभागे हो कि प्रेम का अनुभव नहीं कर सके। न किसी के हो सके, न किसी को अपना बना सके। तुमने प्रेम का आनंद जाना ही नहीं। यह तुम्हारा दुर्भाग्य है।

9. लक्ष्मण और श्रीराम के वचनों में मुख्य अंतर यह था कि लक्ष्मण के वचनों में उद्दंडता, व्यंग्यात्मकता तथा उग्रता का मेल था जो परशुराम के क्रोध को यज्ञ की आहुति हवन सामग्री के समान भड़का देते थे। इसके विपरीत श्रीराम के वचनों में विनम्रता और विनयशीलता का भाव था जो शीतल जल के समान प्रभावकारी थे जिससे परशुराम की क्रोधाग्नि शांत हो गई।

10. 'संगतकार' कविता उन व्यक्तियों के योगदान पर प्रकाश डालती है जो मुख्य व्यक्तियों की सफलता के लिए अपनी इच्छाओं की बलि चढ़ा देते हैं। मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार उसके गायन को और भी सुंदर बनाते हैं तथा उसका उत्साह बनाए रखते हुए उसे अकेलेपन का अहसास नहीं होने देते हैं। ऐसे व्यक्ति प्राय: सभी क्षेत्रों नृत्य, संगीत, खेल, राजनीति, उत्सवों के आयोजन को सफल बनाने में अपना योगदान देते हुए देखे जा सकते हैं। ये लोग अपनी महत्त्वाकांक्षा का त्यागकर अपनी मनुष्यता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

11. वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति उसे कहा जा सकता है जो अपना पेट भरा होने तथा तन ढका होने पर भी निठल्ला नहीं बैठता है। वह अपने विवेक और बुद्धि से किसी नए तथ्य का दर्शन करता है और समाज को अत्यंत उपयोगी आविष्कार देकर उसकी सभ्यता का मार्ग प्रशस्त करता है। उदाहरणार्थ न्यूटन संस्कृत व्यक्ति था। जिसने गुरूत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की। इसी तरह सिद्धार्थ ने मानवता को सुखी देखने के लिए अपनी सुख-सुविधा छोड़कर जंगल की ओर चले गए।

12. लेखिका बचपन में काली, दुबली-पतली और मरियल-सी थी। इसके विपरीत उसकी दो साल बड़ी बहन सुशीला खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख थी। लेखिका के पिता को गोरा रंग पसंद था। वे बात-बात में लेखिका की तुलना उसकी बहन से करते और उसे हीन सिद्ध करते। इससे लेखिका के मन में धीरे-धीरे हीनता की ग्रंथि पनपने लगी और वह हीन भावना का शिकार हो गई।

13. बालगोबिन भगत अपनी सब चीज़ साहब की मानते थे, इसका उदाहरण यह है कि उनके खेत में जो कुछ पैदा होता था, उसे सिर पर लादकर 'साहब' के दरबार में ले जाते थे। उस दरबार अर्थात् मठ में उसे भेंट स्वरूप रख लिया जाता और उन्हें जो कुछ प्रसाद स्वरूप दिया जाता, उसी में गुज़ारा करते थे।

14. फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग बन चुके थे। उन्होंने भारत में रहकर अपने देश घर-परिवार आदि को पूरी तरह से भुला दिया था। 47 वर्षों तक भारत में रहने वाले फ़ादर केवल तीन बार ही अपने परिवार से मिलने बेल्जियम गए। वे भारत को ही अपना देश समझने लगे थे। वे भारत की मिट्टी और यहाँ की संस्कृति में रच बस गए थे। पहले तो उन्होंने यहाँ रहकर पढ़ाई की फिर डॉ. धीरेंद्र वर्मा के सान्निध्य में रामकथा उत्पत्ति और विकास पर अपना शोध प्रबंध पूरा किया। उन्होंने प्रसिद्ध अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश भी तैयार किया। इस तरह वे भारतीय संस्कृति के होकर रह गए थे।

15. भक्तिकाल के प्रमुख कृष्ण भक्त एवं सगुण उपासक सूरदास का जन्म सन् 1478 में तथा निधन सन् 1583 में माना जाता है। मान्यतानुसार उनका जन्म दिल्ली के निकट 'सीही ग्राम' में हुआ माना जाता है। वे जन्मांध थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य से दीक्षित कवि सूरदास अष्टछाप के भक्त कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध थे। वे मथुरा और वृंदावन के मध्य गऊघाट पर रहते हुए श्रीनाथ के मंदिर में भजन कीर्तन करते थे। 'सूरसागर, सूरसारावली एवं साहित्य लहरी' उनके प्रमुख ग्रंथ थे। सूर वात्सल्य एवं शृंगार के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं।

16. महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1864 में ग्राम दौलतपुर, जिला रायबरेली (उ.प्र.) में हुआ। वे हिन्दी के पहले व्यवस्थित सम्पादक, भाषावैज्ञानिक, इतिहासकार, पुरातत्त्ववेत्ता, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, वैज्ञानिक चिंतन के लेखक एवं स्थापक, समालोचक और अनुवादक थे। उनकी प्रमुख कृतियाँ- रसज्ञरंजन, साहित्य-सीकर, साहित्य-संदर्भ, अद्भुत आलाप (निबंध-संग्रह)। द्विवेदीजी ने हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया।

खड़ी बोली हिन्दी को स्थापित किया। स्वाधीनता की चेतना को विकसित करने के लिए स्वदेशी चिंतन को व्यापक बनाया। सरस्वती पत्रिका के माध्यम से पत्रकारिता का श्रेष्ठ स्वरूप सामने रखा। सम्पूर्ण जीवन साहित्य को समर्पित करते हुए सन् 1938 में उनका निधन हो गया।

खण्ड - स

17. **संदर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश लेखिका मन्नू भंडारी द्वारा लिखित आत्मकथ्य 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है।

प्रसंग- घर की हालत एवं विपरीत हालातों का वर्णन लेखिका ने इस प्रसंग में किया है।

व्याख्या- लेखिका ने अपने पिताजी की आर्थिक स्थिति की विवेचना करते हुए बताया कि लगातार धनाभाव के कारण पिताजी का स्वभाव क्रोधी व शंकित होता जा रहा था। आर्थिक स्थिति के लगातार गिरने से उनका अहं और अधिक फैलता या बढ़ता जा रहा था। वे नहीं चाहते थे कि उनकी इस दशा व स्थिति का पता किसी को चले।

यहाँ तक कि इस स्थिति का भागीदार वे अपने बच्चों को भी नहीं बनाना चाहते थे। कहने का आशय है कि अपने बच्चों को अपना दर्द न बता कर उनसे कोई मदद नहीं चाहते थे क्योंकि उनका घमण्ड उन्हें बच्चों के सामने झुकने नहीं देना चाहता था। सदा से उनके अन्दर ऐशो-आराम की नवाबों वाली आदतें, उनकी अधूरी इच्छाएँ, हमेशा ऊँचाई पर रहने की आदतों ने जब उन्हें जीवन के किनारे पर ला खड़ा कर दिया तो उनका व्यक्तित्व निराशा और नाकामी के कारण गुस्से व क्रोध में बदल गया। उनका क्रोधित रूप सदैव बेचारी माँ को डराता-कँपकँपाता था।

वे हमेशा डर के कारण सहमी रहती थी। पिताजी के इस व्यवहार के पीछे उनके अपनों का ही विश्वासघात था, जिन पर वे आँख मूंद कर विश्वास करते थे। इस धोखे ने बाद के दिनों में पिताजी को इतना शक्की बना दिया था कि हम भाई-बहन उनके इस शक के दायरे में आते ही रहते थे। अर्थात् हमें उनका यह व्यवहार हमेशा झेलना पड़ता था।

विशेष-

(i) लेखिका ने पिताजी के शक्की व्यवहार के पीछे की वजह पर प्रकाश डाला है।

(ii) भाषा शैली प्रवाहमय, शांत एवं सरल है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन द्वारा लिखित निबन्ध 'संस्कृति' से लिया गया है।

प्रसंग- संस्कृत और सभ्य के मध्य के क्षीण अन्तर को बताया गया है।

व्याख्या- लेखक ने इस गद्यांश में यह बताने का प्रयास किया है कि कोई व्यक्ति किसी चीज या वस्तु की खोज करता है, उसकी वह खोज शुद्ध, परिष्कृत होगी। आचार-व्यवहार से वह संस्कृत व्यक्ति कहलायेगा। यही खोज उस व्यक्ति की संतान को अपने पूर्वज (पिता-दादा) से बिना प्रयास के ही प्राप्त हो जाती है तो उसके लिए हम उसे संस्कृत व्यक्ति न कह कर सभ्य व्यक्ति कहेंगे क्योंकि संतान ने वह ज्ञान पूर्वज द्वारा प्राप्त किया है।

पूर्वज या संस्कृत व्यक्ति अपनी बुद्धि, विवेक व सोच से एक नए सत्य की खोज करता है एक नया दर्शन, दृष्टि प्राप्त करता है और वही दर्शन, वही दृष्टि, वही खोज, वही सत्य उसकी संतान को बिना प्रयास उसकी संतान होने के कारण प्राप्त हो जाती है। तो यहाँ हम खोज किये गए व्यक्ति को संस्कृत और उसकी संतान को सभ्य की दृष्टि से ही जानेंगे। किसी को देख, सुन, ज्ञान प्राप्त कर स्वयं को बदलना, जीवन दृष्टि को बदलना सभ्यता की निशानी है।

विशेष-

(i) लेखक ने संस्कृत व सभ्य के मध्य के अत्यन्त क्षीण अन्तर को प्रकट किया है।

(ii) भाषा शैली सरल-सहज व बोध क्लिष्टता की ओर है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

18. **संदर्भ-** प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक क्षितिज भाग- 2 में संकलित कविता 'कन्यादान' से ली गई हैं। जिसके रचयिता ऋतुराज हैं।

प्रसंग- कवि ने आधुनिक युग में समाज में आए परिवर्तनों के आधार पर विवाह के समय बेटी को माँ की ओर से शिक्षा दी है; उसे सचेत किया है। आज के बदलते इस समाज में कोरे आदर्शों की कमजोरी का कोई महत्व शेष नहीं बचा है।

व्याख्या- कवि के अनुसार माँ अपनी लड़की को कन्यादान के समय समझाते हुए कहती है कि पानी में झाँककर अपने चेहरे की सुंदरता की ओर केवल निहारते न रहना। केवल अपनी सुंदरता और बनाव- शृंगार की ओर ही ध्यान देना ही तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं है बल्कि परछाई दिखाने वाले उस पानी की गहराई के बारे में जान लेना आवश्यक है। जो पानी परछाई दिखाता है और सुंदरता के प्रति तुम्हें आकर्षित करता है, वह डूबकर मृत्यु का कारण भी बन सकता है- उससे सावधान रहना। आग केवल रोटियाँ सेंकने के लिए होती है। वह जलने और जलकर मर जाने के लिए नहीं होती- इसलिए उसका शिकार न बनना। नारी जीवन को भ्रम में डालने वाले तरह-तरह के वस्त्र और गहने हैं। ये शाब्दिक धोखे हैं जो स्त्री को जीवन में बांध देने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं। माँ ने अपनी लड़की को समझाते हुए कहा कि तुम लड़की बने रहना पर कभी भी लड़की की तरह दिखाई न देना सजग और सचेत रहना। समाज में व्याप्त परिवर्तनों को भली-भांति समझना। यह संसार निर्मम है इसलिए उसे भली-भांति समझना।

विशेष-

(i) गद्यांश की भाषा सरल-सहज एवं भावानुकूल है।

(ii) माँ अपनी बेटी को जीवन संबंधी सुझाव दे रही है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश कवि नागार्जुन द्वारा रचित कविता 'फसल' से उद्धृत है।

प्रसंग- यहाँ कवि ने फसल के बारे में बताना चाहा है कि फसल अनेक नदियों, लोगों के परिश्रम, खेतों की विभिन्न प्रकार की मिट्टियों का परिणाम है।

व्याख्या- कवि ने बताया है कि फसल अपने आप उत्पन्न नहीं होती है। हमारे देश में एक-दो नहीं अनेक नदियाँ बहती हैं। उन नदियों के जल से फसलों को सींचा जाता है। फसलों को उपजाने के लिए एक-दो नहीं अपितु लाख-लाख, करोड़-करोड़ लोग दिन-रात परिश्रम करते रहते हैं, फसल अनगिनत किसानों और मजदूरी के परिश्रम का फल है। फसल केवल एक या दो नहीं बल्कि अनेक खेतों की मिट्टी का गुण-धर्म है। फसल मिट्टी की उपजाऊ शक्ति पर आधारित है। इस प्रकार फसल स्वयं उत्पन्न न होकर नदियों के जल, किसानों के परिश्रम और खेतों की अनेक प्रकार की मिट्टियों का परिणाम होती है।

विशेष-

(i) पद्यांश की भाषा सरल, सहज एवं विषयानुकूल है।

(ii) कवि ने बताया है कि फसल मिट्टी पर आधारित होती है।

19. राम बहुत शांत और धैर्यवान हैं। परशुराम के क्रोध करने पर राम विनम्रता के साथ कहते हैं कि धनुष तोड़ने वाला कोई उनका दास ही होगा। वे मृदुभाषी होने का परिचय देते हुए अपनी मधुर वाणी से परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास करते हैं। अंत में आँखों से संकेत कर लक्ष्मण को शांत करने को कहते हैं।

दूसरी ओर लक्ष्मण का स्वभाव उग्र है। वह व्यंग्य करते हुए परशुराम को इतनी छोटी सी बात पर हंगामा नहीं करने के लिए कहते हैं। वे परशुराम के क्रोध की चिंता किये बिना अपशब्दों को प्रयोग न करने को कहते हैं। वह उनके क्रोध को अन्याय समझते हैं इसलिए पुरजोर विरोध करते हैं।

अथवा

'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित कविता 'आत्मकथ्य' की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

- कवि ने खड़ी बोली में कोमल शब्दों का प्रयोग किया है।
  जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुन्दर छाया में।
- मानवीकरण शैली जो छायावाद की प्रमुख विशेषता है, का प्रयोग किया गया है।
  अरी सरलते तेरी हंसी उड़ाऊँ मैं।
- तत्सम शब्दों का प्रयोग प्रमुखता से किया गया है।
  इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
- गीत गेय और छंदबद्ध है।
  उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।

20. स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्क देते हुए कहते हैं कि स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं, उनकी इस दलील का द्विवेदी जी ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक खंडन किया है। वे कहते हैं यदि स्त्रियों के द्वारा किए गए अनर्थ उनकी शिक्षा के कारण हैं तो पुरुषों के द्वारा बम फेंकने, रिश्वत लेने, चोरी करने, डाके डालने, नरहत्या करने जैसे कार्य भी उनकी पढ़ाई के कुपरिणाम हैं। ऐसे में इस अपराध को ही समाप्त करने के लिए विश्वविद्यालय और पाठशालाएँ बंद करवा देना चाहिए। इसके अलावा दुष्यंत द्वारा शकुंतला से गंधर्व विवाह करने और बाद में शकुंतला को भूल जाने से शकुंतला के मन में कितनी पीड़ा उत्पन्न हुई होगी, यह तो शकुंतला ही जानती है। ऐसे में उन्होंने दुष्यंत को जो कटुवचन कहे यह उनकी पढ़ाई का कुफल नहीं बल्कि उनकी स्वाभाविक उक्ति थी।

अथवा

बिस्मिल्लाह खाँ अपने धर्म अर्थात् मुस्लिम धर्म के प्रति समर्पित इन्सान थे। वे नमाज़ पढ़ते, सजदा करते और खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगते थे। इसके अलावा वे हज़रत इमाम हुसैन की शहादत पर दस दिनों तक शोक प्रकट करते थे तथा आठ किलोमीटर पैदल चलते हुए रोते हुए नौहा बजाया करते थे। इसी तरह वे काशी में रहते हुए गंगामैया, बालाजी और बाबा विश्वनाथ के प्रति असीम आस्था रखते थे। वे हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित शास्त्रीय गायन में भी उपस्थित रहते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

खण्ड - द

21.

(अ) **मेरी अविस्मरणीय यात्रा**

(1) गंतव्य स्थान तक पहुँचना- बारिश का मौसम शुरू हुआ। बारिश का मौसम हम सभी को पसंद है। एक शाम हम सभी मित्र कहीं यात्रा पर जाने का मन बनाया। तभी मैंने अपने कुछ मित्रों के

साथ माथेरान जाने का निश्चय किया था। मेरा पड़ोसी में रहने वाला मेरा एक मित्र गौरेश भी हमारे साथ था। वह कॉलेज में पढ़ता है। हम मुंबई के ठाणे स्टेशन से ट्रैन में बैठे। दो घंटे के सफर के बाद हम नेरल स्टेशन पहुँचें।

(2) वहाँ का वातावरण- वहाँ से हम छोटी ट्रैन जिसे 'मिनी ट्रेन' कहते है उसमें बैठकर माथेरान की ओर चल पड़े। चारों ओर फैली हरियाली, हरे भरे पेड़ और गहरी घाटियों की शोभा का आनंद लेते हुए हम माथेरान पहुँचे। वहाँ हम होटल में ठहरे। माथेरान का वातावरण मोहक और स्फूर्तिदायक था। लाल-लाल वहां की मिट्टी वाले रास्ते और घने जंगल मन को मोह लेते थे। दोपहर के समय भी वहाँ की हवा में ठंडक थी। माथेरान में देखने लायक कई स्थल हैं जो पॉइंट के नाम से मशहूर थे। सुबह और शाम के समय हमने घूम-घूमकर इनमें से अनेक स्थल देखे।

(3) दर्शनीय स्थल- यहाँ के हर स्थल की अपनी अलग सुंदरता और विशेषता है। पर कुछ स्थल तो सचमुच अद्भुत हैं। एको (प्रतिध्वनि) प्वाइंट पर हमने कई बार चिल्लाकर अपनी ही प्रतिध्वनियाँ सुनीं। दूसरे दिन शाम को हमने सनसेट (सूर्यास्त) प्वाइंट पर डूबते हुए सूर्य के दर्शन किए। पैनोरमा (चित्रावली) प्वाइंट ने तो हमारा दिल ही जीत लिया। शारलोट तालाब की शोभा निराली थी। हमने घुड़सवारी की और हाथ-रिक्शे पर बैठने का मजा भी लिया। हमने अपने कैमरों से वहाँ के कई स्थानों की तस्वीरें खींची। वहाँ हम रोज घंटों पैदल चलते थे, पर जरा भी थकान नहीं लगती थी।

(4) अन्य मनोरंजन- माथेरान के छोटे-से बाजार में दिनभर यात्रियों का मेला-सा लगा रहता था। जूते-चप्पल, शहद, चिक्की, रंगबिरंगी छड़ियाँ, सुंदर-सुंदर फूलों के गुलदस्ते आदि चीजें यहाँ खूब बिकती हैं। हमने भी चिक्की और शहद खरीदा। वहां बंदर तो इतने थे की पूछो मत! बन्दर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पे आना-जाना कर रहे थे। कोई व्यक्ति अगर उनके सामने खाने का कुछ निकालता तो वे बंदर उनसे वो चीजे छीन लेते थे। हमसे भी बंदर ने चिप्स का पैकेट छीन लिया था।

अथवा

(ब) अनुशासन

(1) प्रस्तावना- अनुशासन किसी के व्यक्तित्व का आधार होता है। हर व्यक्ति के जीवन में अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण है। अगर आधार सही नहीं है, तो व्यक्तित्व मजबूत नहीं हो सकता। अनुशासन हमे सही समय में सही तरीके से समय का उपयोग करना तथा काम करना सिखाता हैं। अनुशासित होने का अर्थ है अपने शरीर और मस्तिष्क पर नियंत्रण रखना। यह हमें अपने समाज के नियमों का पालन करने योग्य बनाता है।

(2) अनुशासन का अर्थ- अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना है - 'अनु' और 'शासन'। अनु का अर्थ है 'पालन' और शासन का अर्थ है 'नियम'। अनुशासन का अर्थ है 'नियमों का पालन करना'। हमारे जीवन में अनुशासन का अधिक महत्व है यह हमें नियमों का पालन करना सिखाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जो कि समाज में रहता है और उसमें अनुशासित रहना आवश्यक है। अनुशासन हमारी सफलता की वह सीढ़ी है, जिसके सहारे हम अपनी मंजिल हासिल कर सकते है तथा अपने सपने पूरे कर सकते है।

अनुशासन के प्रकार - अनुशासन दो प्रकार के होते है -

- एक वो जो हमें समाज से मिलता है।
- दूसरा वो जो हमारे अंदर खुद से उत्पन्न होता है, अर्थात् हम स्वयं से सीखते है।

(3) अनुशासित व्यक्ति के गुण- हम लोगों को बचपन से ही अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता है। बैठना, खड़ा होना, बात करना, खाना खाना, व्यवहार करना आदि के तरीके अनुशासन के प्रारंभिक पाठ हैं। हमारे बुजुर्ग हमें ये पाठ पढ़ाते हैं। हम कभी-कभी गुस्सा हो जाते हैं, परंतु हमें यह समझना चाहिए कि यह हमारी भलाई के लिए ही है। एक अनुशासित व्यक्ति अपने समाज के सभी नियमों का पालन करता है। वह दूसरों को सम्मान देता है और दूसरों से सम्मानित होता है। उसे अपने व्यवहार पर पूर्ण नियंत्रण रहता है। वह कभी कानून का उल्लंघन नहीं करता। वह कभी किसी को दुःख नहीं देता। वह एक सच्चा देशभक्त होता है। वह स्वयं को भ्रष्टाचार एवं धोखेबाजी से दूर रखता है।

(4) अनुशासन का महत्व- छात्र-जीवन में अनुशासन का बड़ा महत्त्व होता है। छात्र को हर सुबह जल्दी जग जाना चाहिए। उसे अपने बड़ों का सम्मान करना चाहिए। उसे अपना अधिकांश समय अपने अध्ययन में देना चाहिए। उसे झूठ नहीं बोलना चाहिए। उसे कभी भी धोखा नहीं देना चाहिए। उसे कभी किसी के प्रति अशिष्ट नहीं होना चाहिए। उसे अच्छी संगति रखनी चाहिए। छात्र देश के भविष्य होते हैं। इसलिए उन्हें उचित रूप से अनुशासित होना चाहिए। संसार के प्रत्येक महान् व्यक्ति का जीवन अनुशासित रहा है। अनुशासन के बिना कोई व्यक्ति सफल नहीं हो सकता। अनुशासन हमें हमेशा शानदार अवसर देता है जैसे, आगे बढ़ने का सही तरीका, जीवन में नई चीजें सीखने, कम समय के भीतर अधिक अनुभव करने, आदि। जबकि, अनुशासन की कमी से बहुत भ्रम और विकार पैदा होते हैं। अनुशासनहीनता के कारण जीवन में कोई शांति और प्रगति नहीं होती है, जिस कारण मनुष्य अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो पाता और अपने जीवन से निराश होकर गलत कदम उठाने पर विवश हो जाता हैं।

स्वतंत्रता के पहले बहुत-सी समस्याएँ नहीं थीं। लेकिन अब, हमारा देश भ्रष्टाचार, घूसखोरी, घोटाला, धोखेबाजी, आतंकवाद आदि-जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है। कुछ युवा भ्रमित हो चुके हैं। सिर्फ शिक्षित और अनुशासित युवा ही हमारे देश को उज्ज्वल भविष्य दे सकते हैं। अत: यह कहना गलत नहीं होगा कि अनुशासन वह सीढ़ी है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में सफलता की ऊँचाई की ओर चढ़ सकता है। यह उसे अपने लक्ष्य की ओर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है और उसे अपने लक्ष्य से भटकने नहीं देता हैं। अनुशासन ही इन समस्याओं का एकमात्र समाधान है।

अथवा

(स) शिक्षा

(1) शिक्षा का महत्व- उचित शिक्षा सभी के लिए आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने की एक मात्र मूल्यवान संपत्ति है जो मनुष्य प्राप्त कर सकता है। यह हममें आत्मविश्वास विकसित करने के

साथ ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करती है। स्कूली शिक्षा सभी के जीवन में वह पड़ाव है जिससे हर व्यक्ति को पार करना चाहिए क्योंकि यह सभी के जीवन में महान भूमिका निभाती है। शिक्षा प्रणाली को प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च माध्यमिक शिक्षा जैसे को तीन भागों में बाँटा गया है। शिक्षा के सभी स्तर अपना एक विशेष महत्व और स्थान रखते हैं। हम सभी अपने बच्चों को और देश के युवाओं को सफलता की ओर जाते हुए देखना चाहते हैं, जो केवल अच्छी और उचित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

(2) शिक्षा की मुख्य भूमिका- समाज में शिक्षा का महत्व उतना ही है जितना जीवन जीने के लिए पानी का होना। शिक्षा के उपयोग तो अनेक हैं परंतु उसे सही और नई दिशा देने की आवश्यकता है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि एक व्यक्ति अपने परिवेश से परिचित हो सके। शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक अहम भूमिका निभाती है। हम अपने जीवन में शिक्षा के इस साधन का उपयोग करके आप सफलता के मार्ग में आगे बढ़ सकते है। शिक्षा का उच्च स्तर लोगों की सामाजिक और पारिवारिक सम्मान तथा एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है।

(3) व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षा का महत्व- विद्याविहीन पशु को ज्ञान का तृतीय नेत्र प्रदान कर विवेकशील बनाना, उसमें अच्छे - बुरे की पहचान उत्पन्न करना, कायदे-कानून की समझ प्रदान करना तथा जीवन में सर्वांगीण सफलता और सम्पन्नता प्रदान करने के लिए संस्कार और सुरुचि के अंकुर उत्पन्न कर उसके व्यक्तित्व निर्माण में ही शिक्षा का महत्व है।

(4) उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा का महत्व- उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा का महत्व कितना अधिक है उसे हम शब्दों में बयान नहीं कर सकते क्योंकि शिक्षा ही एक मात्र साधन है जो सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण है। जीवन में शिक्षा के इस उपकरण का प्रयोग करके देश और समाज का नाम गर्व से ऊँचा कर सकते है। शिक्षा का उच्च स्तर लोगों को सामाजिक और पारिवारिक आदर और एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है। शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रुप से बहुत महत्वपूर्ण समय होता है। शिक्षा किसी भी बड़ी पारिवारिक, सामाजिक और यहाँ तक कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी हल करने की क्षमता प्रदान करती है।

जीवन को सर्वगुण सम्पन्न और सफल समृद्ध करने तथा सत, चित और आनंद प्राप्ति करने में शिक्षा का महत्त्व है। शिक्षा के सभी स्तर अपना एक विशेष महत्व और स्थान रखते हैं। शिक्षा लोगों के मस्तिष्क को बड़े स्तर पर विकसित करने का कार्य करती है तथा इसके साथ ही यह समाज में लोगों के बीच के सभी भेदभावों को हटाने में भी सहायता करती है। यह सभी मानव अधिकारों, सामाजिक अधिकारों, देश के प्रति कर्तव्यों और दायित्वों को समझने में हमारी सहायता करती है। शिक्षा हमें तकनीकी और उच्च कौशल वाले ज्ञान के साथ ही पूरे संसार में हमारे विचारों को विकसित करने की क्षमता प्रदान करती है।

अथवा

(द) दहेज प्रथा

(1) परिचय- आजकल किसी भी दैनिक अखबार में, दहेज-मृत्यु का समाचार अवश्य मिलेगा। कहने के लिए हमने बहुत प्रगति की है, पर हम अपने समाज को नहीं बदल पाए हैं। यदि स्वतंत्रता की ताजी हवा समाज के मन-मस्तिष्क तक पहुँची होती तो आज दहेज-प्रथा जैसी क्रूरता हमारे यहाँ न होतीं। भारत में शादियाँ हमेशा से एक खर्चीली एवं कष्टकर सामाजिक रीति मानी जाती रही है। वे दुल्हन और लाखों रुपए के उपहार के साथ घर जाते हैं। यही आधुनिक भारतीय शादी है। शादियों में दिए जाने वाले सभी उपहार 'दहेज' की श्रेणी में आते है।

(2) वधुओं पर अत्याचार- आजकल अपेक्षित दहेज न मिलने पर नववधू को कई प्रकार के ताने सुनने पड़ते हैं। नववधुओं को अनेक प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक यातनाएँ दी जाती हैं। दहेज के लालच में पुत्र का दूसरा विवाह कराने के लिए पुत्रवधुओं को विष देकर या जलाकर मार डाला जाता है। अधिकांश मामलों में तो त्रस्त नववधुएँ स्वयं ही आत्महत्या कर लेती हैं। रेल की खूनभरी पटरियाँ, बाथरूमों से निकलता मिट्टी के तेल का धुआँ और सीलिंग पंखों से लटकती या कुओं में डूबी हुई लाशें अनेक बार इसका सबूत दे चुकी हैं। दहेज का दानव कन्या-पक्ष का जमकर लहू पीता है। अपेक्षित दहेज न दे पाने पर बारात ही लौट जाती है। दहेज का इंतजाम न होने पर कभी-कभी तो कन्या का पिता आत्महत्या कर लेता है।

(3) दहेज प्रथा का समाधान- दहेज प्रथा मिटाने के लिए देश के हर एक व्यक्ति को आगे आना चाहिए। हमारे युवक-युवतियों को बिना दहेज लिए-दिए विवाह करने का संकल्प करना चाहिए। दहेज लेने व देने वाले का सामाजिक बहिष्कार कर देना चाहिए। सरकार का भी यह कर्तव्य है कि वह दहेज विरोधी कानून को अधिक कठोर बनाए और उसका पालन कराए जाना चाहिए।

सरकार द्वारा बनाए गए सख्त कानूनों के बावजूद दहेज प्रणाली की अभी भी समाज में एक मजबूत पकड़ है और आये दिन कई महिलाएं इसका शिकार हो रही है। इस समस्या को समाप्त करने के लिए देश के हर व्यक्ति को अपना सोच बदलना होगा। हर व्यक्ति को इसके खिलाफ लड़ने के लिए महिला को जागरूक करना होगा।

दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए तथा इसके खिलाफ लोगों के अंदर जागरूकता लाने के लिए यहां कुछ समाधान दिए गए हैं जिसे सभी गंभीरता से पढ़े और उस पर अमल करे।

(4) महिला सशक्तिकरण- अपनी बेटियों के लिए एक अच्छी तरह से स्थापित दूल्हे की तलाश में और बेटी की शादी में अपनी सारी बचत का निवेश करने के बजाए लोगों को अपनी बेटी की शिक्षा पर पैसा खर्च करना चाहिए और उसे स्वयं खुद पर निर्भर करना चाहिए। अगर कोई महिला शादी से पहले काम करती है और उसे आगे भी काम करने की इच्छा है तो उसे अपने विवाह के बाद भी काम करना जारी रखना चाहिए और ससुराल वालों के व्यंग्यात्मक टिप्पणियों के प्रति झुकने की बजाए अपने कार्य पर अपनी ऊर्जा केंद्रित करना चाहिए। महिलाओं को अपने अधिकारों,

और वे किस तरह खुद को दुरुपयोग से बचाने के लिए इनका उपयोग कर सकती हैं, से अवगत कराया जाना चाहिए।
अभिभावकों को समझना चाहिए कि दहेज के लिए धन बचाने के बजाय उन्हें अपनी लड़कियों को शिक्षित करने के लिए खर्च करना चाहिए। माता-पिता को उन्हें वित्तीय रूप से स्वावलंबी बनाना चाहिए। दहेज मांगना या दहेज देना, दोनों ही भारत में गैर कानूनी और दंडनीय अपराध है। इसलिए ऐसे किसी भी मामले के विरुद्ध शिकायत की जानी चाहिए। युवाओं को दहेज-प्रथा को समाप्त करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। उन्हें अपने माता-पिता से यह कहना चाहिए कि वे दहेज स्वीकार नहीं करें, क्योंकि, शादी आपसी संबंध होती है। दोनों परिवारों को मिलकर साझा खर्च करना चाहिए। तभी सुखद विवाह और स्वस्थ समाज हो पाएँगे तथा देश से दहेज प्रथा हमेशा के लिए समाप्त हो पाएंगे।

22. सेवा में,
प्रबंधक महोदय,
पंजाब नेशनल बैंक,
कुंदन भवन, विकासपुर,
दिल्ली।

विषय- खोए ए.टी.एम. की सूचना देने तथा नया ए.टी.एम. प्राप्त करने के संबंध में।

महोदय,
निवेदन यह है कि कल शाम रायमलवाड़ा मेन मार्केट से घर जाते समय इसी बैंक का ए.टी.एम. कहीं खो गया है। बहुत ढूँढ़ने के बाद भी यह कार्ड मुझे न मिल सका। मैंने इसकी सूचना संबंधित थाने में दे दी है, जिसकी प्रति मेरे पास है। इस ए.टी.एम. कार्ड से कोई लेन-देन न कर सके, इसलिए इसे ब्लॉक करने (रोकने) का कष्ट करें तथा नया कार्ड देने के लिए आवश्यक कार्यवाही करें।
अतः आपसे प्रार्थना है कि पुराने ए.टी.एम. कार्ड को बंद कर नया ए.टी.एम. कार्ड जारी करने की कृपा करें।

सधन्यवाद,
भवदीय
महिपाल सारण
125/4 बी
महेंद्र एन्क्लेव, दिल्ली
05 नवंबर, 20XX

अथवा

राजा राम मोहन राय छात्रावास,
सेक्टर-21, रोहिणी,
दिल्ली,
15 फरवरी, 20xx,
पूज्य पिता जी,
सादर चरण स्पर्श।

मैं स्वयं स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते हुए आशा करता हूँ कि आप भी सकुशल होंगे और मैं ईश्वर से कामना भी करता हूँ। इस पत्र के द्वारा मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव किस तरह मनाया गया।
पिता जी, हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है। इसकी तैयारी 15 से 20 दिन पहले से शुरू कर दी जाती है। छात्र-छात्राएँ विभिन्न कार्यक्रमों की तैयारियां शुरू कर देते हैं। 9 फरवरी को मनाए गए इस वार्षिकोत्सव के लिए आवश्यक टेंट तथा आगंतुकों के बैठने की व्यवस्था कर दी गई। साफ़-सफ़ाई की व्यवस्था देखने लायक थी। चूना आदि छिड़ककर आने जाने के रास्ते बनाए गए। नियत दस बजे देशभक्ति गीत बजने के साथ ही कार्यक्रम शुरू हो गया। मुख्य अतिथि के आते ही सरस्वती पूजन और दीप प्रज्ज्वलन किया गया। छात्र-छात्राओं ने सामूहिक स्वर में 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' प्रस्तुत किया। फिर स्वागत है श्रीमान आपका...स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में देशभक्ति पूर्ण नाटक का मंचन किया गया। फिर तो एक-एककर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इनमें लोकगीत, पंजाबी नृत्य, घूमर आदि मुख्य थे। प्रधानाचार्य जी ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी और कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए आशीर्वचन द्वारा छात्रों का उत्साहवर्धन किया। अंत में मिष्टान्न वितरण के साथ ही कार्यक्रम का समापन किया गया।
पूज्या माता जी को चरण स्पर्श और सुरभि को स्नेह कहना। शेष सब ठीक है।
आपका प्रिय पुत्र
संग्राम

23.

पुस्तक-प्रेमियों के लिए शुभ-सूचना
आपके शहर में
विश्व पुस्तक मेले का आयोजन
दिनांक 25 नवंबर 20xx से 30 नवंबर 20xx तक
रायमलवाड़ा मैदान में
मेले में सभी भाषाओं की तथा अनेक लेखकों-प्रकाशकों की पुस्तकें उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।
एक बार अवश्य पधारें
आयोजक

अथवा

सावधानी हटी!
दुर्घटना घटी!
सोचिए-
घर पर कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।
वाहन की गति पर नियन्त्रण रखिए।
मत करो इतनी मस्ती, जिन्दगी नहीं है सस्ती
दुर्घटना से देर भली.....
जीवन अमूल्य है-
इसकी रक्षा कीजिए।
यातायात नियमों का करें पालन
आपकी यात्रा मंगलमय हो।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.